

स्दर्भ

यन्दे धीरम्

## युवाचार्यादि-पदोत्सव

बीर्वेहिया हैय प्रधान । <u>बीद्</u>यारित ।

श्री साधुमार्गी देन पूज्य श्री हुक्मीचंद जी महाराज का समाज-टितैपी-श्रावक मंडल मन्दसीर [मालवा]

प्रयमावृत्ति ] १००००

मृल्य चार ञ्चाने

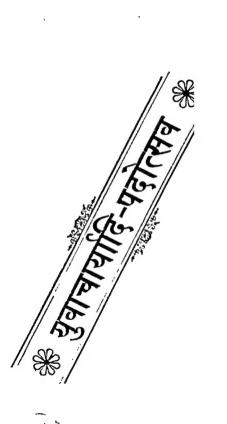
次立立中位:2000年中央中央公司

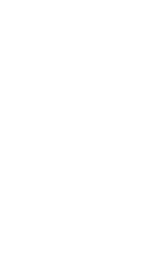
वीराप्द २५६४











## युवाचार्यादि-पदोत्सव।

पत्तपातो न मे फक्षिल हो पोप्पश्विषयते । युक्तिमद्ववनंयतु तदेवेह निवश्यते ॥ पूर्व विवरण

धी साधुमार्गा-समाज का अम्युद्य-काल निकट आपा तो चारों ओर से आवाज उठने लगी कि 'साधु-सम्मेलन अवस्य होना चाहिए।' इसी उद्देश्य से विभिन्न सम्प्रदायों के मुख्य-मुख्य नेताओं का पक अप्युटेशन (प्रतिनिधि-मख्डल) सभी सम्प्रदायों के पृख्यों एवम् मुख्य साधुकों से मिला और अजमेर में एकव होने के लिए उनसे अनुनय-विनय की। पृज्य थी मन्नाजात जी महाराज को खास कर कहा गया कि आपको वहां अवस्य प्रधारना चाहिए। इसीलिए सन्नों ने पृज्य थी को अपने कन्धों पर उज्जावा और उन्हें अजमेर के समारोह में



वातवर वान् कर दिया था। वय अवनेर के श्रीव खरवा पहुँचे नो दोनों पूजों का एक मन्दिर में वार्तातार हुआ। अना में सम्य की कोई योजना तय न हुई। तय पूज्य भी अमील के स्विप की राजवयानी की कवि नानवर की, पूज्य भी कारी-राम की महाराज धारि ने पह बाव सुनाई कि किसी को मम्पन्य सुन्दर्श किए दिना समा होना कड़ित है। इस पर उपर्युक्त मुनियंत्र और महितात की महाराज—माँ रन पांच सुनियों को दोनों और से मध्यस्य यनाया गया। और निम्म-रक्तर से मीतिया प्रा तिस्व दिस्स परा—

## प्रतिज्ञा-पव

संबद् (६६० वैत्र मुस्ता ४ एकवार स्पन्न खग्बा । व्यावन के पात )

दोनों पृत्य पृत्य भी महाजात वी महागाव होते पृत्य भी वक्टरस्तात वी महयव करने जाने पत के दोनों का नियम सर्प करने के तिय दोनों पत के दोनों भीने निधि और पक सर्पव देसे पांच साधुकों की पत कमिटी नियन करने हैं। इस महालाजवी मानी के ने- पृत्र वस्ति तत्त्व को नानी वह देने (श्रीप्य भी समोत्तव क्षियों मान (श्रीमाभी महातत्व वी मान (र) कदिवर्ष भी नामवेंद्र वी मान (र) , , , रानवाद वी ,, सर्पव—

युवाचार्य क्षी क्यतीयम की महाराव



उस मोली को पून्य भी श्रामोलख ऋषि जी महाराज, राताविधानी पंडित मुनि भी रतनवन्द जी म०, कविवर्य पंडित मुनि
भी नानवन्द्र जी म०, पून्य भी काशीराम जी म०, उपाप्याय जी
भी सात्माराम जी म०, गर्ष भी काशीराम जी म०, उपाप्याय जी
भी मणीलाल जी म०, युवाचार्य भी नागचन्द्र जी म०, पंठ
मुनि भी छगनलाल जी म०, पं० मुनि भी माणकचन्द्र जी म०,
शौर पंडित मुनि भी रामकुँवार जी म० शादि २ प्रसिद्ध,
विद्वान और वक्ता मुनिवरों ने भी श्रपने कंधों पर उठाने का
सीभाग्य प्राप्त किया था। इस विशाल मुनि-समुदाय का प्रवं
विराद् मानव-तेदिनी का जुल्स जिस समय श्रजर-श्रमरपुरी
भजमेर के मध्य पाज़ारों में होकर निकल रहा था उस समय
की शोना का दश्य पढ़ा ही मनोहर और श्रमिराम था। जिसकी
सुन्दरता का कुछ दश्य पाठकगण इसी पुस्तक में चित्र द्वारा

ु कुछ दिनों के याद मध्यस्थ मुनियाँ ने सम्प के सम्यन्य में भूतकालीन फैसला दिया। यह इस प्रकार है—

## भृतकाल का फैसला

सम्बत् १६६० चैत्र सुदी १३ शुक्रवार के रोज श्री श्रजमेर में दोनों पूच्यों की तरफ से नियत की हुई कमिटी, दोनों तरफ के पुरावे देख कर व उनकी बावत परस्पर पूछ-तोड़ कर, नीचे



को पुत्य की महालालकी महाराज ने क्योंकार किया। प्योंकि पैयों को लिख कर तहरीर दे दी भी कि बार को करें यह हमें मन्त्र हैं। श्मी यात को कायम करते के लिए पृत्य की महा-लालकी महाराज ने राउने हक में न होते हुए भी, भूतवाल के पैसले को मन्त्र किया। हम पैसले में पैयों ने दोनों ज्ञायार्थों को केतावनी ही, कि बारह सक्सीम का निर्मय दायस ही में तय कर लें। सेकिन शायस में तय गर्श हका। ध्यापय पश्यों ने पित निक्नलिंगित सेकी स्थान पृत्य भी महालाल जी मह के पास केकी-

> व्यज्ञमेर सार्व्यक्षमध्य

पूरप थी मणातात ही महाराज्ञ.

इस्ट्रेसर

भाग रोजो एउयों में पंचलाते से लिए दिया है। कि "मूत-बाद का तिसंग हो जाने के बाद सांविष्य के लिय बादह से मेंग, मक सुवावार्य, यक बराव्याय, ब्याहि का निर्देश राज्य करेंगे सो रेजों की सेजा करना पहेंगा। देखा हिएसा है। इस दिखा के भागुमार, स्विष्य कर पेन्सला देजे का पंची की भागियाना दिया है। जिससे भाग राज (बाद को ) तक दानी पूर्य प्रस्पाद जिल के स्विष्य का पंचाल कर से । बादि नहीं किया तो भागताने की सहात की ब्रह्मसार स्विष्यकार के विषय में पत्थ



पुरुषों की भीजुर्गी तक दोनों पूरुषों की रहेगी । और पक काचार्य रहने पर एक द्वाचार्य की होगी ।

् (६) फॅलला मिलने के साथ परस्यर बाय्द्र सम्मीग खुला करें।

> दः भ्रमोत्तम कृषि दः मुनि मन्दित्त दः मृति रानपाद दः मृति नानवन्द्र दः मृति कारीतम

रम प्रकार का फैसला मिलने ही पूरुप थी जगहरतात जी महापज का इस्य हुएं के सारे बालॉ उहलने लगा. फर्नोक इनकाल का फीयला तो उनके हक में उहा ही, भविष्यकाल 🖪 फैसना भी उन्हों के द्वार से गहा। दक्षि यह अविष्यकाल 🖪 फैसला और सब्हा रहा। सुयाबार्य भी बदना और बेले भी सर सर्व । भहा प्रय प्रमा बसी नहीं ! प्रवास वर्ष के पर पुरव की मजालासओं महाराज के माधुमी का करिनाव भी नहीं ग्रेस । पयोजि होने वाले सब बेने ग्रोहीलात ही की रोंगे—पंचों ने देना फैनता किया। इस फैनते ने पूरव औ वरदरलार हो महाचङ के दिल में इसे की एक वहीं भागी छातुर्ग पेना दर हो। देवों ने भो सोवा, दि पाटे पट्ट न्याय ही या सन्याय, यह जिसम हत या हम्मू बन हें से वहमा तियम के बत पहुने पर रित इस प्राप्ते सम्प्रतायों में हिन्से की भेते वहीं बनारे हेंगे. इस यह बारों बारों गारान के इस्से हे होते ।



प्रिय पाठक, एक जगह सम्भोग श्रौर दूसरी जगह नहीं:-अजमेर में सम्भोग और व्यावर में नहीं ! यह क्या जैन सिद्धा-न्तानसार न्याय है ? नहीं, ऐसा करना श्राचार्य के लिए कलंक की यात है। 'पर समस्य को नहिं दोप गुसाई' के नाते पूच्य जवाहरलाल जी की कौन कहे ? उघर सत्याप्रही मुनि मिथालाल जी कहते हैं कि जब अजमेर में सम्भोग हो गया श्रीर यहाँ नहीं होगा तो में अपना सत्याब्रह नहीं होह गा। अन्त में समाज के नेता एक डेप्युटेशन के रूप में हुए श्रीर उन्होंने दोनों पृत्यों तथा बहुत से मुनियों को एक जगह एकत्र किया। बढ़ें। पर पंचों के दिए हुए फैसले की उपेदा कर फिर नबीन फैसला दिया गया। यदि कोई यों कहे कि मुनियों का दिया हुआ फैसला रह नहीं किया गया तो हमें उसकी समक पर तरस आता है। क्योंकि जब वह फैसला रदद नहीं था तो फिर उस फैसले की शर्ती को तीसरे फैसले में दोहराने की पया जरूरत थी ? आवश्यकता तो इस वात की थी, कि सभी जगह सम्भोग खोलने की शर्त ही स्वीकार कर्गा जाया यस पदी शर्त ही केवल अमल में नहीं लाई गई थी। सभी शर्ती को फिर से झन्य फैलते में दोहराना पहले के फैसले को रदद करना है।

दर श्रसल में यात यह थीं, कि युवाचार्य-परोत्सव की चिन्ता सता रहीं थीं। उसकी तिथि निश्चित करानी थीं। तीसरे फैसले को देख कर बस यह बात साफ मानुम पड़ जाती.





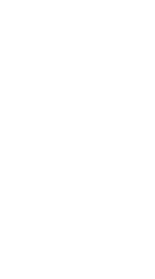


तं परन्तु जो सरपंच नियत करने में एकमत न हो तो थीं बरदभाए जी सा॰ पितल्या तथा थीं सीमानमत जी साहय मेहता ये होनों साथ मिल कर मतमेद का समाधान कर दें। इन में भी मतमेद रहे तो होनों गृहस्थों ने सीलयन्द कथर मेलिडेएए सा॰ को दिया है। उस में लिये हुए नामयाला पंच दोनों गृहस्थों के सरपंच के तीर पर जो निर्पय देवे सो खन्तिम समभा जाय।

- (३) मुनि धी गरेहाताल की महाराज की युवाचार्य-पर तथा मुनि धी पृथचन्द्र जी महाराज को उपाध्याय-पर संश् १६६० के कागुरा सुदि १४ पहिले देने की किया होना निश्चित किया है।
- (४) फागुम सुदि १४ के बाद नय शिष्य हों, ये युवाचार्य भी की नेसमय में रहें।

उपरोक्त ठद्दराय कोन्करेन्स के में सीडेप्ट सार भी देसवन्द्र भार नथा टेप्युटेशन के शृहस्य और साधु-सम्मेतन में पथते हुए मृतिगाओं के समझ पट् सुनाया है। धीर सभी ने सर्था-सुमन से म्यीशन कुरमाया है।

्राय प्रधार के फैनले को धापने इक में न होने हुए भी, पृत्य भी मणाताल जी महाराज ने संघ की शानिन के लिए न्यांकार किया और प्यायर में बातुर्मील करने के लिए अजनेर में पिरार कर दिया। पूज्य ज्यादिग्लाल जी महाराज ने आजनेर से उद्पपुर बातुर्मील के लिए विदार कर दिया। पृत्य मणान



होनों सम्प्रदायों पर फैसले के श्रमुसार हो जाती तो फिर वे धारा-धोरख याँधने की बात हो क्यों कहते ? क्योंकि दोनों सम्प्रदायों पर जब उनका पूर्व श्रिषकार हो गया तो फिर धारा-घोरख कीज़ ही क्या थीं। श्रतपत्र पूज्य जवाहिरलाल जी मध का यह कथन करना ही इस यात का खोतक है, कि वे श्रमी

में सम्प्रदायों के पूर्व श्राप्तकारी नहीं हुए हैं।
जब बातुमीस के श्रवसर पर श्रीसिडेंग्ट उद्यपुर होते हुए
यर श्राद थे। मुनि श्री बीयमलजी महागत्र ने उनको कहा
कि हमारे पृत्य का स्वगंबास हो गया; श्रवः हम सब मुनि
तुमीस द्रुपे होते हो स्थविर थी नैदललजी महागज के पास
हुँ में। दृष्य जबादिग्लाल जी महाराज का मी यही फर्ज है
व यद पथा श्रीय रजलाम पहुँच कर स्थविर महागज को
परवासन हैं नियम-उपनियम भी यही दर्नेगे।

वार्तिक माल में उद्देषपुर से पृत्य अवाहिन्साल ही मन् हा सन्देश ह्यापा कि बानुमांस की समाप्ति पर मुम्ल से निर्माण में मिलें। मुनि श्री चीधमलजी महाराज ने उत्तर दिया के गंगापुर में अधम ती हर थोड़े हैं। दूसरा, सोरं यहाँ ह्यान-जाना चाहे तो उसके लिए स्टेशन से गंगापुर यहन दूर पदेगा। प्रता मिलना तो चिचीं हु में ही रखें यह स्थान दोनों यानों के कनुकूल मी है। पर कार्निक शुक्ता = को, हन्दीर निवासी भी स्विध्यन्दर्श कहादन के झारा, पूज्य अवाहिरलास जो मन्ने यह समाचार भिजवाया कि चिचीं हु में तो दो पड़े



साम्प्रश्चिक सम्बन्धी धाराधोरण श्रादि तो थीमान् स्पविर पंदित मुनि भी १००= भी नन्दलाल जी महारात साहय की मेपा में रतलाम हाँ होना उचित होगा। पर्योक स्मर्गाय पूज्य थीं १००= थी महालाल जो महाराज साहर की भी पढ़ी रच्छा थीं। और स्थिय महाराज सा॰ की भी पदी रच्छा है। रमीतिष सभी स्थानों के मुनियों को रतलाम बुलाने के समा-पार प्रसें से शा चुके हैं। शौर वड़े मदाराज की प्रायस्या के राएव धीमान स्वचन्द्र जी महाराज साहव उनकी सेवा पोइना नहीं चाहने हैं। चीर धीमान् मृदवन्द जी म॰ का रागीर भी कमजारी धादि सागीरिक कारती में ठीक नहीं रहता रै। इस दास्ते साम्प्रशंविक सम्बन्धी विचार-विनिमय सी थीमान पटे महाराज की सेवा में रतलाम में होने में विशेष सुविधा रहेगी । यह बात पहले भं. थीमान वर्षमान जी पित्रहीया रतलाम घाला की मार्कत पृत्य थी को खेवा में। क्षत्रे पर्याः च चुरी है। मी बार यह उरराक सर हालात पूज्य महायञ्च साः की सेवामें क्षर्त कर दिख्ये। यंग्य सेवा लिखें।

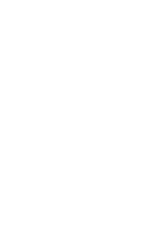
सारवा--

नीदमत टोडरवात

राज्युर में पूर्व जवादिस्तातजी महायज के जी समाचार राजान गर्वे ये वे इस प्रश्नार ही—

LT.

सिद्ध थी रतहाम गुभ स्थान सर्वे ।मा माश्चि थी पर्यमान







के निवासियों की प्रार्थनाओं को स्वीकार न करते हुए उप्रता से न्द्रकर निम्बाहेड्रे की श्रीर श्रा ही रहे थे। यहाँ तक की एक साधू को जोरों से बुटार द्वाना था तो भी वे उनकी बुखार की हातते में भी विद्यार करने हुए पधार रहे थे। सगर मार्ग में स्वर ने श्रोर पक्तमा तव गंगापुर रास्ते में पड़ा तो वहां पर श्रीपघोप-भार के लिय मुनि थीं को उद्दरना पड़ा। वटाँ पर पूज्य थीं के समाचार छाये तो उनको समाचार करवा दिये थे कि मुनि जी का जार कुछ कम दोने ही ग्रीय था गहे हैं। इतनी स्चना कर देने पर भी पूज्य जवादिग्लाल जी मः ने तार दिलयाया भीर शीवता के लिप लिखवाया। ती क्या मुनि भी चौपमल डी म॰ सार्कल पर चढ्कर चले छाने ? मुनिकी वृत्ति है । किर पक लाधु को बुखार था पेली स्थिति में भी विदार करते हुए भा ही गहे थे। सौर फिर निम्पाहेड़े पहुँच कर यह सभी स्थिति पूज्य जवादिग्लाल जी म॰ से मुनि धी बीधमल जी मः ने स्राप्ट बक्तट भी कर दी थी। इतना सब दोने दुए भी दिनेच्यु मंडत द्वारा प्रशासित परोत्सव के 'निवेदन-रव' के पृष्ठ ध पर लिखा गया है कि 'नियत तिथि को बाट नां दिन यीत क्षाने पर भी. मृति भी चौधनल जी महाराज नहीं पपारे"। हनका ऐसा तिखना शन्याय संगन और द्वेष से पनिपूर्य है। प्रस्तु भी चौधनल जी महाराज मी करेडे से विहार कर

मन्तु भा जावनत जा नवाराज ना नरू राजवार पर प्रवतुर गंतातुर होते हुव ग्रींड ही पीस विदी १२ ग्रुक्यार को निम्महेंद्रे प्रथारे। पूज्य ज्याहिरसात जी महाराज ने

















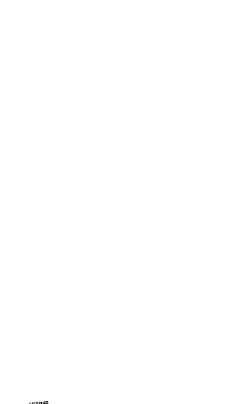


































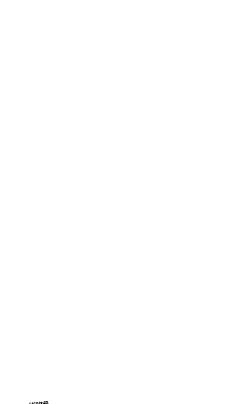


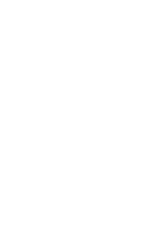








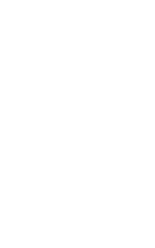


































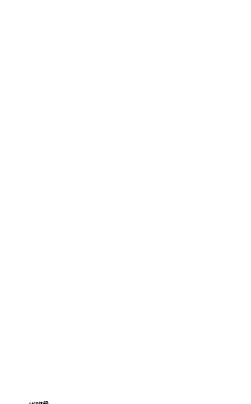


























मोट—इस लेख की एक नकल ताः २७-१-३४ को रजिस्ट्री एए जैन प्रकास में प्रकाशनार्थ भेज दी थी।

उत्तर से श्रामन्त्रण पत्र व दो भार श्राप थे। उनके समाकार सुन कर भाषी पूज्य श्री खूधचन्द जी महाराज ने तारि-१-३४ को यह फरमाया कि—'पूज्य श्री ने स्पिवरों की
नैया मेरी सम्मति लिए दिना ही मुनि घासीलाल जी श्रादि
का सन्तों को श्रयवा निम्बाहेड़े में पूज्य श्री मजालाल जी म०
के मुनियाँ का सम्भोग पृथक् किया जिससे साधु-सम्मेलन का
रिश्या नियम पूज्य श्री के हारा भंग हुआ। शादि रन सप
पाताँ का समाधान य गुद्धि होकर प्रीसिद्ध में न जाव तय तक
मैं क्या उत्तर हे सकता है ?

ह्सरी पात यह है कि मुनि धासीलाल जी पृत्य श्री नपा मुनि श्री गरेशीलाल जी के लिए जो जो आलेग्जनक यहाँ कहते हैं उनका समाधान भी सम्प्रदाय के मुनियाँ की कीमडो हारा प्रथम होना भविष्य के लिए डीम होगा। कीर यास्त्रय में ऐसा करना परम सावस्यक भी है।

उपरोक्त यातों के स्वष्टीकरण के परवात् स्वविष् गुरू वी भी नन्द्रतात जी मः के समत्त धाराधीरण वंधने के यार युवराज व उपाध्याव सादि परिचर्यों की जियाने काने की तिथि व प्राम निरिचन किय जायेंगे।

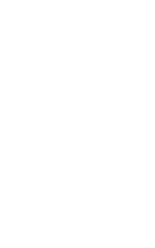
यदि रतने पर भी पूरव भी कपनी रूप्यानुसार ही करना चाहते हैं तो मेंसे उसमें हिल्लिज भी सम्मति नहीं हैं।























हम मुनि धो खुबबन्द जी के श्राचार्य पद पर नियुक्त होने पर हार्दिक प्रसन्नता प्रगट करते हैं ।

थी संघ अजमेर

म्यावर से- 17-2-34

Jainodaya Pustak Prakashak Samiti Ratlam.

overjoyed being Maharaj Shree Khubchand ji appointed Pujyaji may live long.

-Kundanmal Lalchand.

महाराज श्री ख़्वचन्द्र जी के पूज्य पद पर नियुक्त होने पर बड़ी प्रसन्नता हुई। महाराज श्री बढ्त दिन जीवित रहें— यह प्रार्पना है।

सेठ कुन्दनमल लालचन्द न्यावर

बद्यपुर से-- 17-2-34

Master Mishrimal ji Ratlam. Read telegram very glad by this news.

Shree Sangh.

रस ग्रम समाचार का तार पढ़ कर बड़ी प्रसन्नता हुई। श्रीसंघ उदयपुर

**दै**दराबाद से—

17-2-34

Mishrimal master Jainodaya Fustak Praka-



क्रिक्ट्रेस सेंडेटरी धीमान धीम्लाल जी सा॰ प्रमुख थे। क्ति स्तताम आवर पूज्य धी खुवचंद जी महाराज की सेवा के निवेदन किया कि जाप अपनी ली हुई पूज्य पदवी वरीरह में मुन मिक्षातात की मागरका और संघ की शास्ति के लिए भेड़रें। एउर धोरमृष्डेंद जी महाराज ने घहा कि ठीक है हम मनी पर्विया प्रोड़ने के लिए तैयार हैं हमारे और पृत्य उद्दरसात जी मः के सम्मोग हुटने के बाद जी हमारी तरफ िर पहत्ये वादि हुई है यह, और पूज्य जवाहरलात जी मण में बुनारा पैदा करने के लिए सम्प्रदाय के सभी साधुकों की सम्मिति दिना श्री जो युवराज पहची ही है यह, इस प्रकार दोनी िशें को प्रोर से दी गई पद्दिया बायम खाँच ली जाय थीर कित सम्बाद में सम्ब करने में लिए सभी मुनि मिल कर सर्वेगामित से भी गरेडीताल जी की गुपराज पत्नी को घरन प्रतान करें। इस में हम भैयार है। स्म प्रकार के मेरी कारी-भी प्रकाल कर भी भी मुलात जी में उपला मीनास्य समभा । ये पूर्व भी की इस महान उदारता के लिए भें दी राज तुम और बधने समें कि धाव है जाएकी धेवंता कीर ग्याम-मृत्ति को । आप अपनी पर्यापयी की बापम स्थित भेटें। मार्ग्य सम् उत्तर-शुनि के नित्र कामी कोटिए। पन्यस्य है। इस हो तो यमे हो हो । इस प्रकार शहीते मरने इसम के दहलात प्रकट किये।

रितर वे बढ़ी के दूरव की उच्चहरमात जीमहातार के चान



































ा अवार-रहोत्तर - Reg | "

म महार तिसना प्रेसिडेन्ट महोदय का अन्याय पूर्ण क्राहि प्रयश्री के सन्तों ने कोई भी विश्वीत वर्सन नहीं

ना। विस्तात वर्तन कियर से हुआ है ? इस विषय में हम ित्व में पहले यहुत कुछ लिख चुके हैं किन्तु यदि पाउक रेंगे हो इस विषय में सप्रमाण विशेष स्पन्टीकरण

कंत्रय करते।

कारे चतकर तिखते हैं कि 'धाराओरख के लिप रतलाम

य क्रमह क्यों होना चाहिए ?"

सिना सप्टोकरण ऊपर कर खुके हैं। फिर भी नियेदन है हि रनताम में सक्तिल भारतीय स्था॰ साधुसमाज में पूजनीय भोट्ट स्थविर गुरू जी विराजमान हैं। अतः इन मदापुरुष र्घ रानासीय प्राप्त करने के लिए ती स्वर्गीय पृज्य धी ने

रिरापीरस रतलाम में दी बांधने के लिए फरमाया था। किन्तु हेर मी द्यानी देश रख के रतलाम खाशर भाराधीरण नहीं

पेथे और समाज में फुट के अंकुर पैदा किए। भागे यस कर इसी पैरेमाफ में लिखने हैं कि "धाराधीरण रिने करते कहीं मतभेद हुआ होता और उतना ही खुलासा

हेली गृहस्य को रतलाम भेज कर मु॰ थी नन्द्रताल जी म॰ ताः के पास से पुतासा सँगाने का अध्य किया होता तो र्वेश या ।"

दस यही सो दात है कि गृहस्य की दीख में दासने का









१२० मुकाचार्याद-पदोत्सव ब्रनेक प्रपंच रचने पहुँगे और ये इसी चिन्ता में शत दिन त्यस्त रहेंगे । कदिए, फिर धावकों का भला कैसे हो सकता है ? आगे चल कर लिखते हैं 'कि पँच के मेश्वर मृतिराज साहयों को मेरी विनंति है कि जयपूर के शी संग्र के पास से अथवा भी वर्लम भी माई जीहरी की आश कर के महागत श्री चोयमल जी शीर मार्सालाल जी को शांति के सन्देश भेजें श्रीर एक्य प्रयत्न करने को सूचना करें।" पाठकी, देखा प्रेसिडेन्ट सा० के लिखने का इंग ? जब संघ में शान्ति दोने के लिए पंच सुनिराजों की तरफ से पेसि हेंद्र सा॰ के पास पत्र गया तब शुमनाम, अपरिचित व्यक्ति आदि कह कर डाल दिया और ऊपर लिखने हैं कि शान्ति का सन्देश भेजें। पाठक स्वयं निष्कर्ष निकालें कि गफलत और लापरवाही किसकी तरफ से इंदे? मनि भी बीधमल जी ध्येय था कि शन्न

पक कमेटी जि भी . ।





## भाग्यशाली मन्दसीर में युक्तन्द्रायक्ति-पद्गित्स्य मङ्गलाचरण

(१)

नेता नीतिविदो सुभाषितवता विद्वन्सुनीनां च यः । निर्मानः समलद्धरोति सततं तीर्थैः प्रदत्तं पदम् ॥ शोतृणां मनसां भ्रमं विधुनते सर्वे सुषा स्किभिः । पूज्यः पूज्यवरः सदा विजयतां श्री खूबचन्द्रो सुनिः ॥ (२)

उत्सार्ट वर्षयन्नित्यं प्रमोदं प्रथयत्परम् । छगनलालप्रनिर्मान्यो भूयाद् भारतमण्डले ॥

(8)

प्रभुचरण पवित्रे लोक विश्वत चरित्रे ।
प्रतिपदमभिरामे अन्दवीराख्यपामे ॥
हुगनमुनिवरस्य धर्मनिष्ठापरस्यं ।
समभवतिरम्यो यौवराज्याभिषेकः ॥
(४)

महोस्ववेडस्मिन् श्रमणाहिः प्रपृते । जनाः समायुः स्वजनैः समेताः ॥ समे युवाचार्यमुखं निरीह्य । भूवना े विश्व ॥ वर्धाक विरोध का प्रस्ताय यास किया। इस पर पूर्णिकी भागाल ता मन्द्र का गाउन काम्फोम का बहिस्कारका त्या क्यक सामावन म तहली धामक स्रात्रीक, उत्पात नार नायर रचनाम स्वाचरात व्यक्ति वत्यामी शहरी है

निर्देश राज्यात कालाल के क्या प्रकार करने पर औ लाहार रास रास र यहानक कि. कह बन्ने साहिस्यों ने

सम्बद्धाः । । । । । । वस्त्रं स्वर्णाः स्वीचार्यः

पर परमा । १९ मारण पुरव पन क विकास में हुन न सन्दर्भ रजकर समान्य व्यवस्थान विद्याही

- 1.702 ·

. . .

## भाग्यशाली मन्दसीर में पुकाचायादि-पदेशत्सक मङ्गलाचरण

(3)

नेता नी दिविदां सुमाधितवतो विद्वन्सुर्नानां च यः। निर्मानः समलह्योति स्ववं वीर्थैः प्रदत्तं पदम् ॥ भोतुरां मनहां भ्रमं विद्युनते हर्वे सुधा ह्रिक्रीमः । पून्यः पून्यवरः खदा विजयतां भी खुबचन्द्रो सुनिः ॥ (२)

उत्सार्ट दर्बन्नित्वं प्रमोदं प्रयमनुबरम् । ह्यनतत्तत्त्वतिर्मान्यो भूपाद् भारतमञ्जले ॥

(8)

प्रभुवरण पतिने लोक विभुव चरित्रे । प्रतिरदमनिरामे मन्दर्गीराख्नमाने हुगनदुनिवरस्य वर्गानेष्ठावरस्यं स्प्रावतिसम्यो यीवराज्याभियेहा ŧl (8)

महोत्ववेऽस्मिन् बनराहिष्य पूर्व । ह्माः हमापुः स्वदनैः हमेताः॥ हने स्वाचार्यद्वां निर्देश । **भ**म्बनाहेरूरहमर्दिताहब



रते हे के का किया सहका की से ने करते रात है उनके जिल्लाका करता का विकास को हा कि राज राज में विद्यारेग्स है रके स्टब्स र सम्बद्ध कि ए एक कर्म व स्वास्ति है।

बर्क हर : - - र र र राज्य ग्राहर स्ति १० के व्यक्त स्थान स्थान स्थान है देखा राज्यमान क्षेत्र के में के मंत्र का क

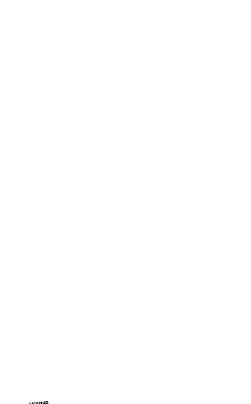
सिर्मात । १५० र मा ४ जन क्या (सम में प्रस्ति हर । एक एक प्रस्ति व स्टब्स्ट व क्र राजन के मार्ग कर्म कर्म करण रहन के केन्द्र मेरा है। व्यक्त केन्द्र शहन रा बल्यान सार प्राप्त के एक प्रीमान करते हैं है are the contract of the

ताक साम । । यह बत्तुव हु क्षा क्षेत्रक र स्पुत्तक । १००६ वर स्टेब्स्ट्रेस्ट्रेस्ट्र रति पर ११ का व्यक्ति हुन हुन हुन L. La ten in Land Chamber CRECT SEC FOR SOME THE the to be and the fame.











- (१४) भी॰ गेंदक वर जी म॰ (१६) भी॰ सौमागक वर जी म०
- (१७) , शेमुकुं चर जी म॰ (१=) ,, शीलकुं चर जी म॰
- (१२) , केरारकुंबर जी म० (२०) ,, चतुरकुंबर जी म० (२२) ,, प्रताकुंबर जी म०

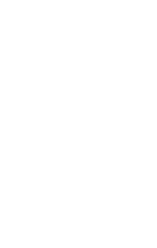
## (२३) भी राजमति जी म॰

रस प्रकार समस्त मुनि और महासतियाँ जी १०१ महो-स्वव में उपस्पित हुए। माघ ग्रुक्ता १० से उदयपुर, यहीं सादकी, निम्यादेश, महागढ, संजीत, जावरा आदि शहरों से सगमा १०० स्वयंसेवक सेवामाव से प्रेरित होकर आए हुए थे। रन सब की पोशाक घड़ी सुन्दर थीं। हैंसमुख चेहता और उमस्ता हुआ हदय—यस एक सुशील स्वयंसेवक के लिए और बाहिए ही क्या ? मृग के पास कस्त्री है, यही यहत है।

मुनि श्री के व्याख्यान माथ ग्रुहा १० से दी उपरोक्त
परडाल में भारम्भ दृष । माथ शुक्ला १० के पदले से दी दर्शनार्थियों का आना भारम्भ दो चुका था । माथ शुक्ला ११ के
दिन व्याख्यान में आर्द दुर्द जनता का इदय देख कर चिन्ता
होने लगी कि लोग कहाँ येंडेंगे १ द्राना विशाल परडाल दोते
दुष भी उस में अगद कम पड़ रदी थी। दों, परडाल के आसपास खुली जगद और लम्बे-बौड़े भांगय हैं—यहाँ येंड आयेंगे।

## रतलाम से स्पेशल ट्रेन।

माच ग्रक्ता १२ को रतलाम से एक स्पेशत ट्रोन वहाँ के







\$

1

ł

प्यभी पर्व घाँदला के विदार्थियों का मंगलावरण हुआ। त्रान्तर मुनि क्षियों की और से भंगलाचरण हुआ। फिर रामपुरे के विद्यार्थियों का और स्थानीय पाठशाला के छात्रों का 'वेतकम' (Welcome-स्वागतम्) दूमा एञा। इसके पाद मुनि थी शस्तूरचन्द जी महाराज ने अपना वक्तव्य दिया। फिर रणनीय पाठराला की केसरिया रंगकी साड़ी घाली ११ बालिशयों ने मंगलाचरण किया। तत्परवात् प्रसिद्ध वक्ता र्षः मुनि श्री चीथमल जी मः सा० ने श्राचार्यं, उपाध्याय, गर्खां, भवतंत आदि पदाँ की जिम्मेदारियाँ पड़ी रत्पी के साथ अपने वकत्व में फरमाई'। श्रोता व्यान पूर्णक सुन रहे थे; पर विराट् अन-समृद के कारण सप लोग नहीं सुन पाय। उस समय सोगों की भाषना हो उठी कि यदि लाउडस्पीकर (रेटियो ) का प्रकार दोता तो ज्ञाज सभी लोग अच्छी तरद सुन पाते। सुनि धा के स्वारुवान पूर्ण होने के पश्चात् पूज्य मुनियाँ के, थीं संघों के, प्रतिष्ठित धीमानों के शौर राजा-मदाराजायीं के साप द्वप शुभ सन्देश धी-जैनोदय-पुस्तक-प्रकाश-समिति, रत-लाम के श्रवैतनिक मंत्री धीमान् मास्टर मिधीमल जी सा० ने पढ् कर सुनाय।

ञ्चाए हुए शुभ-सन्देश । रुविवर्ष पं॰ मुनि थी नानपन्द्र बी महाराज सा

सुम-सन्देश---

"x x र राज जैन जनता विशेषक साधु मार्गीय



ति भी एवं थाँदला के विदार्थियों का मंगलावरण हुआ। व्यक्तर मुनि क्षियों की और से मंगलाचरण हुआ। फिर रामपुरे के विद्यार्थियों का झौर स्थानीय पाउरााला के छात्रों का 'नेतहत' (Welcome स्वागतम्) ड्रामा हुआ। इसके याद कुनि भी इस्त्रचन्द जी महाराज ने ज्ञपना वक्तव्य दिया। फिर स्पतीय पाठशाला की केसरिया रंगकी साड़ी वाली ११ कतिशक्तों ने मंगलाचरण किया। तत्वश्वाद् प्रसिद्ध यक्ता र्ः मुनि भी चौपमल जी म॰ सा॰ ने सावार्य, उपाप्याय, गर्जी, म्बर्चक सादि पदाँ की जिम्मेदारियाँ यही स्पूर्ण के साथ सपने क्ट..य में फरमाईं । क्षोता ब्यान पूर्यंक सुन रहे थे; पर यिराट् डन-समृद्ध के कारण सब सोग नहीं मुन पार। उस समय सोगों की भावना हो उठी कि यदि लाउडस्पीकर (रेटियो) का भ्रम्भ होता तो सात्र सभी लोग सन्दी तग्ह सुन पाने। हिने भी के स्पारपान पूर्व होने के पहचात पूज्य मुनियाँ के, भी खंघों के, प्रतिष्ठित शीमानी के और राजा-प्रदाराजाओं के काप हुए ग्रुम सन्देश धी सैनोदय-पुस्तक-प्रकाग-समिति, रत-लाम के क्रयेतिनिक मंत्री धीमान मास्टर मिधीमल जी ला॰ ने पढ् कर सुनाय।

ञ्राए हुए शुभ-सन्देश । कविवर्ष एं॰ सनि थी नानपन्द्र वी महाराव का

सुम-सन्देश— "XXX बात जैन जनना और विशेषतः साथु मार्गीय

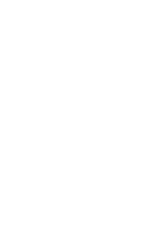


स्विभी एवं योदला के विद्यार्थियों का मंगलावरण हुआ। म्कतर मुनि कियों की क्षोर से मंगलाचरण हुआ। फिर रामपुरे के विद्यार्थियों का और स्थानीय पाउदााता के सात्रों का 'नेतहम' (Welcome स्वागतम् ) हामा हुआ । इसके याद मुनि धी कस्तूरचन्द जी महाराज ने जपना वक्तव्य दिया। फिर स्पनीय पाउराता की केसरिया रंगकी साड़ी वाती ११ र्वतिक्षक्रों ने मंगताचरच किया। तत्क्क्वात् प्रसिद्ध यका र्षः मुनि भी सौधमल जी म॰ सा॰ ने साचार्य, उपाध्याय, गर्दी, भवतंक आदि पदाँ की जिम्मेदारिया यही ख्या के साथ अपने हत.य में फरमाईं। क्षोता ध्यान पूर्वक सुन रहे थे; पर विराट् डन-समृद्द के कारए सथ लोग नहीं सुन पाप। उस समय होगों हो भावना हो उठी कि यदि लाउडस्पीकर (रेटियो ) का प्रकारोता तो आञ सभी लोग अरदी तरह सुन पाते। हिने भी के स्पाल्यान पूर्व होने के परवात पूज्य मुनियाँ के, भी संघा के. प्रतिष्ठित धीमानी के सौर राजा-प्रदाराजासी के भाष हुए गुम सन्देश धी खैनीदय-पुस्तक-प्रशय-समिति, रत-ताम के रुवैतनिक मंत्री शीमान् मास्टर मिधीमल जी सा॰ ने पड़ कर सुनाय।

ञाए हुए शुभ-सन्देश।

कविवर्ष पं॰ धुनि श्री नानचन्द्र दी महाराज का शुम-सन्देश—

"x x x प्राप्त जैन जनता और विशेषतः साधु मार्गीय



साहित्य देमी पं॰ रत्न श्री प्यारवन्द सी महाराज से जैन जनता स्व परिचित है उनको गटिन्यद का भार प्रदान करना में सुसंगत है।

. रही प्रकार घोर तपस्वी धीमान् मोतीलाल जी महाराज तपा ५० रत्न धी हजारीमल जी महाराज इन दोनों महातु-भागों को प्रचर्तक पद समर्पेट होता है। उसकी भी हम अनु-भीदना करने हैं। जीर उन सभी मुनियाजों को जपने अपने पद का मार यहन करने की अधिक-प्रधिक शक्ति प्राप्त हो। कौर हनके पुनीत हस्तों से सम्प्रदाय के और समाज के किथक-स्थिक सेवा-कार्य हों। येसी सम्भावना रखने हैं।

प्रेपक - वर्शल दुगनलाल सरमीयन्द, नवसारी।

×

×

×

भारत-भूषण त्युग्रतावधानी एं० मृनि थी मीमान्य-ष्ट्य जी महाराज का ग्रुम-सन्देश-

"x x x यह रहत सुरी जातेई हा समाचार है कि उपर्युक्त सुरवित्यों को उपर्युक्त प्रविद्यों ही जा नहीं हैं। x यह कार्य जिस नगर में होता है उसका प्रत्य भाग्य समाभने हैं। जीर यह मंगलाकारी कार्य हाति पूर्य सफत हो जाते की कामना रखते हैं। जाता है कि उपर्युक्त प्राची के सचीन्य मुनियज महारी पूर्य की सुवालात जी मन



स्थित नहीं हो सकता हूँ। हमारी सम्प्रदाय के प्रवर्तनी जी भी हन्त्रा जी महासती जी ठा॰ ३ सहित इस सुझवसर पर प्यार रहे हैं। इस पदोत्सव में हमारी पूर्व सहातुभूति और सम्मति है । xxx "

> × × ×

प्रवर्षक वयोद्दद् स्यविर मुनि श्री द्यालवन्द्रदी म० का सम-सन्देश-

"x x x स्यावर से भी काल्यम औं कोठारी के मार्फत पुणवारं-पदोस्सव की खास चामंत्रच पत्रिका मिली। पद्ने से क्षति दर्प प्राप्त दुक्ता । xxx"

प्रेयक-जैन वर्द्धमान समा समरही (मारवाह)

आमुक्ति पंडित रत्न मुनि श्री घातीलाल जी म॰

र्भीर धीर तपस्वी थी मुन्दरहाठ डी म॰का ग्रम-मन्द्रेश—

"xxx बड़ा दी दर्प का विषय है कि शान्त दांत राखविरारद भी १००८ भी मञ्जीनाचार्य पूर्व भी सुरचन्द भी मः के पार पर भाषी जाबार्य भी भी १००= भी एगनतात सी मः दनाय आयेगे। इथर "स्व" अर्थात् निर्मत चन्द्र सादात् 'सुदबन्द्र डी पूज्य है।" निर्मल बन्द्र की निर्मल कान्ति विश्वतित क्षेत्रे से बनेक कुमुरूदन विष्टतने हैं। किर बहु-कृत बातायस्य कुमुद कादि की कृद्धि करता है देखे भाषी



नात जी मन को दी वावेगी सो कत्यानन्द की यात है। xxx'' प्रेयक—धी मोतीलाल कोस्तवाल,

× × × ×
भीमान् रायबहादुर सेठ विस्ट्रमल जी गाट्रमल जी चोदा अजमेर का गुभ-सन्द्रेग्धः—

"x x x स्यामी जी भी १००= भी दगनतात जी महाराज ने मार सुदी १३ शनीवार ता० १६-२-३४ ने युवाचार्य-१द-पदान होवाका ग्रभ-कवसर पर कांवा की कार्मकर पिक्का कार्र सी पुगी हो। हमकी तकलीक होवा से शरीक होवा में मजवूरी है सी जाएसी। हमारी यन्द्रना माद्रम करायसी। x x x "

१ का आठका । इसारा बन्दना साद्म करायका । ४४४ "

४ ४ ४

श्रीमान् सेठ सागरमठडी नधमठडी ह्र्यं वह उटगाँव
(र्ष्यं सानदेश) का शुभ-मन्देश—

"आपका गुभ कामबन्न पत्र मिला। बड़े हुएँ की पात है।
के मन्दसीर सरीकी तर्गभूमि में युवाधार्य-पर की बहर प्रदान
ह्य महीत्सव होगा। कींग का शुभ कर्म में जैन समाज की
सवस्य हुएँ होगा। में भी इन गुभ कदसर पर जबर काता
सेकिन मेरे पुत्र की शादी निष्ट्यित हो जाने से मैं काने के लिए
कसमर्थ हूँ। इसलिए में इन्द्रीर हुक्यनसे मुनीमकी को मेन्ंग।
सो बिदित हो। में मही का सकता इसतिय बहुत दिसमीर हूँ
सीर इसिस्य मान्ने बाहता हूँ। ४००%















्धीमान् लाला ज्यालामसाद की सा० ने कानीङ् (पटियाला स्टेट) से ता० १४-१२-३४ को जो तार भेसा था यह इस प्रकार है--

To

Jain Sangh Mandsaur.

Unable attend, Wish Success.

चर्षात्-द्याने में असमर्थ हैं। कार्य में सप्तसता पारता हैं।

भीमान सेड लालचन्द जी बोटारी स्टापर से चपने मान्देश-२-३४ के मार से लिखने हैं--

Congratu at as on Yuvarajship Sorry could not atten i  $+ c \cdot c \cdot c$  ,  $- v \cdot c$ 

चर्यात्—युद्धाः ब्रह्मासय पर कर्याः। शह है कि में समय में सम्बद्धाः तत्र ता क्याः।

भीमात संद प्यांत्माणका साथ बाबमेर ,से बारने १६-३-३३ के नार में क्लिके ई-

Francisco de l'Ambrellant, Limit di Matter

क्यांच् त्रांत्य - पार्म्यात्त्व व हो सक्य रण्यं ह्या व्यक्ति हैं और मान्य हम समझर्प मेरिकश्चा हैं ।



san ctioned

मर्पात्-मुक्ते खेद है कि दुट्टी मंजूर न होने के कारण मैं र्यास्थत नहीं हो सकता।

ĸ

.

भीनान् घोँहीराम जी दलीचन्द जी पूना से अपने ता०१४-भी। से नार में लिखने हैं—

Unable to attend Mahotsaw. Wishing every

वर्षात्—मदोत्तव में सिमिलित होने के लिए असमर्प । १९८ प्रकार से सपलता चाहता हैं।

×

भीमान लाला गोनुलयन्द की सा० औदरी देहली से खपने मार १६-२१ के मार में लिखने हैं-

Being marriage here eant attend.

मार्थान्—यहाँ पर विवाहीत्सव होने के कारय में द्रपरियन गरी हो सकता।

>

Lam to occurs. His Highmos's shinks to you for your had seleptum detal the tech







र्षे आपद किया था; किन्तु मुनि धी ने अस्वीकार किया। फिर भी रस युवाचार्य पदादि महोत्सव के श्रवसर पर पूज्य र्था ने पर्व मुनि-मरहल ने प्रसिद्धवक्ता पं॰ मुनि थी चौयमल जी म॰ से ऋत्याप्रह कर "जगहसम जैन दिवाकर" की पदपी स्वीकार कर लेने के लिए कहा और फरमाया कि हाँ, आपका मनाव जैन-जैनेतर समाज में पदवी चारियों से भी कई गुला विग्रेप है । अतः आपको पद्धी दे देने में प्रभाव बढ़ाने का हमारा र्षेय नहीं है। केवल आए जैसे जैन-धर्म के महान् प्रभाविक पुरुषों को पदवी से सुशोभित करना मेरा और मुनि-मर्टल का परम कर्तःय है। इसलिए इस पद्यों को तो छय आप छवर्य स्वीशर करें। इस ब्रकार की खदर स्थानीय थी संघ की ज्ञात दोते दी यह संघ इस शुभ सन्देश का समर्थन करता हुआ चतुर्विधि भी संघ को इपं-प्रपाई का यह समाचार पहुँबाता हुमा एतराय दोता है।

भपशीयः— भी रवे॰ स्था॰ जैन भी संप मन्दर्शीर (मातवा)

डगरियत साथु साध्यो धापक धाविका चतुर्विष धी स्रंथ ने पक स्वर से सभी पद्वियाँ का समर्थन किया तुमुत उप-ष्यिन से परडाल गूँज उठा। सभी के बेहरे पर प्रसप्तता की कपूर्व स्विष थी। धामान पंडित सुरत-नुनि जो महागज के निम्बोक्त मुदारिकवाद की कविता पहने के परवाद जयस्पिन







डररत मोटिंग हैं। उपमें प्रस्ताव तो बहुत हुए; परन्तु रह स्तल प्रस्ताव यह या कि धान्मेंस के प्रेसिटेन्ट भी रेनबन्द भार्र ने उपोट्यात सींच लेने के लिए संस्था भी स्चना रेंग्यां। उसी के मुतादिश उपोद्यात सींच लिया गया।

माप गुक्ता १४ की उसी विशाल परदाल में प्यारपान हुंगा। प्यारपान की समाध्ति पर सरपायिया म॰ ने इस तरद भाषा दिया—

पुरुषाद वयोष्ट्य धीमान् स्वचन्द जी म० साहव तथा मित्र बता मुनि भी चौधमल जी म॰ सा॰ तथा उपस्थित इति-सरदल, दिय बन्धुक्षो, मालासी य बहिनों, काल का दिन रहा मंगलमद, पांपय पर्व गुरापना है। जब कि गुकाम हूर-रणड से भार, बहन तथा मानाय युवाबायोहि-पदीलाय नपा मुनिधियों के दर्शनार्व चाकर यहें। समिमतित रूप हैं। रेमा राम बयसर किन्सी में मिलता रात्यन हुसँब है लिसके लिय मुक्ते चल्रहद कार द तथा हर्ष पैदा हो रहा है और हमी दुर्गी में बुद्ध बोलने का काहत कर रहा है। सहली, में न मो पाया हो हैं कौर व हाए पड़ारिसका हो हैं; त्यावि हुई कुई रो-पार राष्ट्र सारको लेटा से साहराष्ट्रवेश सर्व करना-दारुता हैं । मुक्ते सारत है, सार हैनवह बहर बह समुद्रहीत करेंसे । मान ही हुए बाली होने पर एका की बरेंगे। हैन धर्म के मारि तीर्वहर भी पानमंत्र जी में हेवर प्रतिक्र तीर्व 'बर भी भगवाद महावीर दर्गत कियते भी अभिकार हुए हैं



जनरत मोटिन हुई। उपमें प्रस्ताव को बहुत हुए, परानु एक शास प्रस्ताय यह था कि कान्मेंस के मेसिसेन्ट भी देनवन्त्र भाई ने उपोद्धान सींच लेने के लिए संश्वा भी स्वना सी भी। उसी के मुनाबिक उपोद्धान सींच लिया गया।

साय ग्रहता १४ की उसी विशास प्रशास में स्वास्त्रत हुआ। प्राप्ताम की समाप्ति पर सरवादिया में० में इस तरह भाषा दिया—

पुन्यपाद पयोगुद्ध धीमान् सृष्यन्य जी मः साहब तथा र्मानय पना मुनि धी बीचमल जी म॰ सा॰ तथा उपरिधन प्रीत-माटल, द्रिय बन्धुस्ती, मात्राची व वट्ति, साल ब्रा दित <sup>क्</sup>रा मंगलस्य, पांपत्र पर्वे शुरात्रता है जर कि शुकास हर-र्गाप्त से थारं, रहन मधा सानाये प्रवादायोदि-वदी जय निया मनिधियों वे दर्शनार्थ कावर यहाँ। सामिसीतन हया है। रेंना राम भारतर शिर्मी में मिलना मायल हुईंब है जिसके लिए मुझे चारदा बार र तथा दर्व देश हो रहा है और इसी पुर्ति भे बुद्द बीतारे का शाहल कर रहा है। शाहली , मैं क मी पता हो ही झीर व हुआ प्रदाशीनका हो ही, मदावि हरे-मूर्ट दी-बार कार्य कार्या वेदा वे कार्यपूर्वक कर्व करका-कार्य हैं। मुने बारा है, बार हेराण्य रहत का बहुत्हीर करेंगे। साम हो कुछ कमनी होने पर एका की बरेशे। हैं र अर्थ के मार्दि तोर्वेषर भी प्राथमीय में में होता प्राप्तिया तीर्वे 'बर को क्रान्यम् अपूर्वाण दर्श र हिन्छे ह्यू नोर्टेबर एए ह



